BJS
Bharatiya Jain Sanghatana

BJS ई-बुलेटीन 2020

Edition 29, 05th May 2020

JAINS FOR INDIA

संपादक की कलम से

प्रिय स्नेहीजन,

कोरोना काल के बाद की दुनिया और मनुष्यों की जीवनशैली पर अनेक अटकलें लगाई जा रही हैं. सोश्यल डिस्टनसिंग मनुष्य जीवन का अब अभिन्न अंग बन जायेगा. सामाजिक समारोह, विवाह या सुख दुख के अवसर, सिनेमा हॉल या restaurant शायद अतीत बन जाएं.

गत कुछ दशकों के सामाजिक अध्ययन से यह स्पष्ट है कि मनुष्य असामाजिक बनता जा रहा है. औद्योगिक क्रांति, वर्तमान शिक्षा प्रणाली, वैयक्तिक व मुक्त विचारधारा के कारण, उसकी संवेदनाएँ मर रही हैं. सोश्यल डिस्टनसिंग के काल में उन्हें जीवित करने के प्रयास मात्र कल्पना या दु:स्वप्न्न साबित होंगे. हमें अब वह कहानी लिखनी है जो कदाचित हमें ही पसंद न हो.

निरंजन जुंवा जैन

सदस्य - BJS राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति

श्री शांतीलाल मुथ्था का Scale, Speed, Skill तथा Sustainability विषय पर 3 मई, 2020 को Online संबोधन

श्री. शांतिलालजी मुथ्था
संस्थापक, BJS

आप सभी को सादर नमस्कार. आशा है आप सभी स्वस्थ्य होंगे. आज दूसरा लॉक डाउन समाप्त होकर तीसरा लॉकडाउन शुरू होगा. ये सिलसिला कितना लंबा चलेगा, अभी कुछ कह नहीं सकते. हम सभी घर में हैं. काफी समय सीखने व समझने व interaction हेतु मिल रहा है. BJS के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजेन्द्र लुंकर अलग अलग विषय को online लेकर आ रहे हैं. गत सप्ताह Decision Making & Risk taking विषय पर मैंने आपसे चर्चा की थी. आज मुझे Scalability का अर्थ क्या है? Business, Profession या NGO में scaling कैसे करें, विषय पर चर्चा करनी है. इस विषय में मेरे अनुभव आपके साथ साझा करना चाहूंगा.

भारत बड़ा देश है. जनसंख्या 130 करोड़ है. इसलिए कोई भी कार्य scaleable model के साथ करेंगे तो ठीक अन्यथा उसका कोई अर्थ या महत्व रह नहीं जाता. कुछ मित्रों ने संशय व्यक्त किया है कि NGO Model को Business से कैसे सम्बद्ध करेंगे. Scale is Scale. Strategy और Skill को पहले दिन से सामने रखेंगे तो Business, Profession या NGO जो भी हो, वह scale up हो सकता है. यह सिद्धांत सभी पर समान रूप से लागू नहीं होता क्योंकि हर व्यक्ति या संस्था की क्षमता या demand, supply, investment की स्थितियाँ अलग अलग होती है. यदि हम किसी ऐसे प्रोजेक्ट पर कार्यरत हैं जिसमें लम्बा समय invest करने की जरूरत है, तो प्रथम दिन से ही scaling सोच में होनी चाहिए तब ही सफलता से कदम आगे बढ़ सकेंगे.

सन् 2003 में NGO field में कार्य करते हुए लगभग 17 वर्ष हुए थे. यह अनुभव और समझ मिली कि कार्य कोई भी हो, मूल (fundament) उसके structure तथा values में होते हैं. मैं education sector में कार्य करना चाहता था. मित्रों और हितेषियों से सलाह ली. सभी ने कहा अच्छा विचार है. बढ़िया क़्वालिटी की ऐसी pilot स्कूल बनाओ कि देश के लोग आपके स्कूल के मॉडल को अपनाएं. मुझे भी लगा कि एक स्कूल का निर्माण करूं तो निश्चित ही बढ़िया बने. किन्तु यह विचार भी आया कि land तथा building में बड़े investment के साथ 12/15 वर्षों के मेरे जीवन का time investment व अन्य resources लगाकर, अधिकतम 10,000 विद्यार्थियों तक पहुँच सकूंगा. मेरा यह स्कूल शायद अच्छा बने, branding भी हो जाए. लोग इस मॉडल को पसंद और replicate भी करें. किन्तु क्या यही मेरा उद्देश्य है?

मैं कुछ differently सोच रहा था और उसी सोच को लेकर आगे बढ़ना चाहता था. मैंने देश की स्कूल शिक्षण प्रणाली को समझने का निश्चय किया. पता चला, देश में 14 लाख स्कूल हैं, जिनमें 85% सरकारी व 15% निजी क्षेत्र में है. जो मेहनत एक स्कूल बनाकर करूं, उतनी ही मेहनत से सरकारी स्कूलों की quality सुधारने व value education पर काम करूं तो मैं लगभग

Contd...

दिए लिंक को क्लिक करे

BJS CREDAI MCHI MOBILE DISPENSARY SEVA

https://youtu.be/Ul0nBYobXJ8

https://youtu.be/1XPN-upJQWk

BJS द्वारा संचालित आपके द्वार मोबाइल डिस्पेंसरी सेवा पर एक विडिओ फ़िल्म देखें

उतने ही समय में करोड़ों विद्यार्थियों तक पहुंच सकूं. प्रथम दिवस से ही scaleable Model पर आत्मविश्वास व दृढ़ संकल्प के साथ काम करना चाहता था. अनेक चुनौतियाँ थीं. सरकार का अपना sylabus, system, teachers और विद्धार्थी थे. No decision makers. इसमें बाहर वालों को प्रवेष नहीं. Business या profession, बड़े scale पर करना है तो चुनौतियों का सामना करने की क्षमता से ही सफलता मिलेगी. आप जो करना चाहते हैं और यदि 10 में से 8 ना कहते हैं तो निश्चित ही वह चुनौतिपूर्ण है और उसमें से ही scalable model बाहर आ सकता है.

मैने इस model पर कार्य करना शुरू किया. सरकारी स्कूल शिक्षण नीति, पाठ्यक्रम, शिक्षण प्रणाली, अध्यापकों के काम करने का तरीका आदि सब का गहन अध्ययन किया. यह समझ में आया कि देश की स्वतंत्रता से लेकर अब तक शिक्षण प्रणाली में किसी तरह के fundamental परिवर्तन नहीं हुए. यह भी समझ में आया कि यह परिवर्तन सरकार नहीं, कोई बाहरी व्यक्ति या organization ही ला सकता है. इसलिए चुनौती को स्वीकार किया, पूरी शक्ति और संसाधन लगाकर इस मॉडल पर कार्य शुरू किया. Risk भी पूरी पूरी थी, मॉडल fail हो सकता था. परिणाम की चिंता नहीं की. मेरा उद्देश्य school education की quality को सुधारना व value Education लाना था, जो देश के करोड़ों बच्चों तक पहुंचे. बस इस लक्ष्य को हासिल करने का ज़ुनून था. गत कुछ वर्षों में दुनियाँ के स्कूल शिक्षण में हुए परिवर्तनों का अध्ययन किया, मैकेन्ज़ी जैसे लोगों से consultation लिया. इसके लिए 300/400 व्यक्तियों को सन् 2003 में नियुक्त किया जिनमें educationist, experts के साथ management, development, implementation तथा technology पर कार्यरत लोग हैं. एक स्कूल के विचार से प्रारम्भ हुई यात्रा आज एक लाख स्कूलों तक पहुंची है, जिसमें value added education का हमारे द्वारा design किया currriculum पढ़ाया जाता है जो सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त है. यह महाराष्ट्र के अतिरिक्त गोवा व गुजरात में यह लागू है. प्रारम्भिक समय जो काफी लंबा रहा, उसमें testing, impact assessment, evidence creation आदि कार्य पूर्ण हुए. अभी इसका प्रथम चरण पूर्ण हुआ है.

हमने यहां अनुभव किया कि पूर्ण निश्चय हो तो impossible भी possible हो जाता है. मैं यह चाहता था कि हमारी energy, inteterst, resources का लाभ मात्र कुछ हजार तक सीमित न होकर समस्त community के लिए होना चाहिए. इस सफल Model में scale, skill और sustainability तीनों की भूमिका रही है. सही Strategy से ही मॉडल सफल बनता है. यही Model और Concept, business पर भी लागू होता है. एक जमाना था कि दुकान से 10 मिनट को भी बाहर जाना हो तो गल्ले पर बेटे को बिठाकर जाते थे. आज technology आधारित बड़ी संख्या में scalable Models हैं जिनमें chain of Malls, Restaurants, Cinema आदि का शुमार होता है. पुणे में 'जोशी वड़ा' के 50 से अधिक outlets हैं. 'येवले' चाय की franchise का model Mcdonald की तरह का है.

देश में अधिक कम मात्रा में सूखे की स्थिति बनी रहती है. प्रत्येक गांव में पानी की समस्या रहती है. कुछ लोग पानी की समस्या हल भी कर लेते हैं. ऐसे लोगों की कमी नहीं है. राजस्थान व महाराष्ट्र में उनके द्वारा created Model देखने व समझने को अन्य राज्यों से लोग आतें हैं. किन्तु वह मॉडल गांव के स्तर पर सफल होते हुए भी scalable नहीं हो सके. कारण कि कहीं न कहीं strategy का अभाव रहा. प्रश्न यह कि जब हम एक गांव को पानी की समस्या से मुक्त कर सकते हैं, तो जिले को क्यों नहीं? देश में लगभग 6 लाख गांव हैं, उनकी पानी की समस्या को एक एक कर करने लगे तो एक नहीं अनेक जीवन भी कम पड़ेंगे. देश की इस समस्या का हल scalable मॉडल से ही आ सकता है.

मुझे 2013 से 2018 तक इस क्षेत्र में अलग अलग मॉडल पर कार्य करने का अवसर मिला. जो अनुभव प्राप्त किया उसके आधार पर एक मॉडल create किया 'सुजलाम सुफलाम', जिसमें एक जिले को सम्पूर्ण रूप से जल पर्याप्त बनाने की योजना थी. महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री से मिला. उन्होंने बुलढाणा जिले हेतु स्वीकृति प्रदान की. इस मॉडल में बहु विशेषताएं थी. जिले की लगभगदो से तीन हज़ार water bodies यानि तालाब और डेम आदि की खुदाई से उनकी जल संग्रहण क्षमता बढ़ाना था. क्रियान्वयन व पर्यवेक्षण का उत्तरदायित्व BJS के पास रखा गया. मशीनों की व्यवस्था BJS ने की. इसके एवज में सरकार को एक भी पैसा BJS को नहीं देना था. सरकार को खुदाई में उपयोग में आ रही मशीनों में डीजल भराने हेतु खर्च करना था. खुदाई से निकली मिट्टी को किसान को खुद उठाकर उसके खेत में ले जाना था. उसका खर्च किसान को वहन करना था. सम्पूर्ण पार दर्शक मॉडल जिसमें लेनदेन का प्रावधान ही नहीं था. यह प्रोजेक्ट बुलढाणा में 2 वर्ष में पूर्ण हुआ. इस सफलता पर महाराष्ट्र में 4 ओर जिलों को हाथ में लेने का आग्रह तत्कालीन मुख्य मंत्री ने किया. कर्नाटक में 3 जिलों पर कार्य प्रगति पर है. UP और झारखंड में भी हमें आमंत्रित किया गया है. एक जिले को जल पर्याप्त बनाने का यह प्रोजेक्ट सम्पूर्ण रूप से strategy व

technology आधारित है. Decision making इसमें बहुत important है. Speed-Skill जरुरी है क्योंकि यह प्रोजेक्ट समय सीमा में पूर्ण होना ही चाहिए. इस मॉडल से कुछ वर्षों में सम्पूर्ण देश को जल पर्याप्त बनाया जा सकता है.

अभी फिलहाल जिस प्रोजेक्ट पर कार्यरत हूं, यह मॉडल different है. गत 25 वर्षों से भी अधिक समय से हम disaster में राष्ट्रीय स्तर पर काम कर रहे हैं. लॉक डाउन में आदमी घर से बाहर नहीं निकल सकता. वह बीमार हो जाये तो डॉक्टर के पास उसका पहुंचना बड़ा मुश्किल व risky भी है. इसलिए डॉक्टर को उनके घर गली में लेजाने का मॉडल बनाया. अभी तो आदमी को जरा सा जुकाम या खांसी ही जाए तो वह डर से कांपने लगता है कि कहीं कोरोना तो नहीं. लोगों का डर खत्म करना हमारा उद्देश्य है. हमारी मोबाइल डिस्पेंसरी वैन मोहल्ले मोहल्ले में जाकर चेकअप करती है, दवाईयां देती हैं और साथ में तसल्ली भी. कोरोना suspected व्यक्तियों को municipal hospital में refer किया जाता है. हमारे अब तक refer किये गए लोगों में 132 कोरोना पॉजिटिव निकले हैं. बहुत early stage में उन्हें detect करने से उनकी जान तो बची, साथमे संक्रमण को रोकने में हम सहायक हो रहे हैं.

इस मॉडल का प्रारूप जब कुछ मित्रों के सामने रखा तो सभी ने कहा कि यह प्रॉजेक्ट नहीं करना चाहिए क्योंकि डॉक्टर्स तथा कार्यकर्ता मिलना आसान नहीं होगा, साथ ही इसमें रिस्क बहुत होगी. मुश्किल होने के बावजूद इसे शुरू किया. सरकार से अनुमति ली. पुणे मे प्रथम सेवा शुरु की और पाया कि बहुत उपयोगी है. फिर पिम्परि और चिंचवड़ में शुरू की. 1 डिस्पेंसरी वेन से शुरू कर आज 150 तक पहुँचे हैं. तीन राज्यों में यह सेवा हो रही है. पुणे में श्री अभय फिरोदिया और मुम्बई में वल्लभजी भंसाली का पूरा पूरा सहयोग मिल रहा है. मुम्बई में CREDAI- MCHI ने ownership ली है. मुम्बई में 200 से 300 वैन को कार्यरत करने की योजना है. दो दिन पूर्व मालेगांव में 11 मोबाईल डिस्पेंसरी सेवा शुरू की है. इस मॉडल में सम्पूर्ण मैनजमेंट एक फैक्ट्री के मैनेजमेंट के समान है. Technology, Speed और skill का इसमें भरपूर उपयोग हो रहा है.

यह स्मरण में रहे कि business को technology के साथ चलाना है. Future को anticipate करके ही planning करना. Real estate में ceturation point को समझकर assessment करना होगा अन्यथा scale होने पर भी success नहीं मिलेगी. श्री हनुमंत गायकवाड़ छोटी सी परिस्थिति के आदमी, किन्तु आज House Keeping मे उनका नाम है. 80,000 employees हैं व 20,000 indirect employees हैं. देश के 20 एयरपोर्ट, PM House तथा राष्ट्रपति भवन आदि का हाउस कीपिंग उनके पास है. निम्न सूत्रों को सदैव स्मरण में रखें :

1. Try to avoid short cuts. Stick in values and ethics
2. Think always out of box. Do not go for mind set in a set mind.
3. Set Goals.

में BJS के सभी कार्यकर्ताओ को हृदय से नमन एवं चरण स्पर्श करता हूँ.

BJS मोबाईल व्हॅन आरोग्य शिबिर, जैन मंदिर, भट्टीपाडा मार्केट, मुंबई

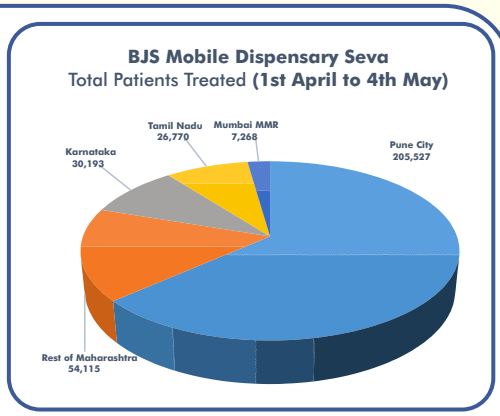

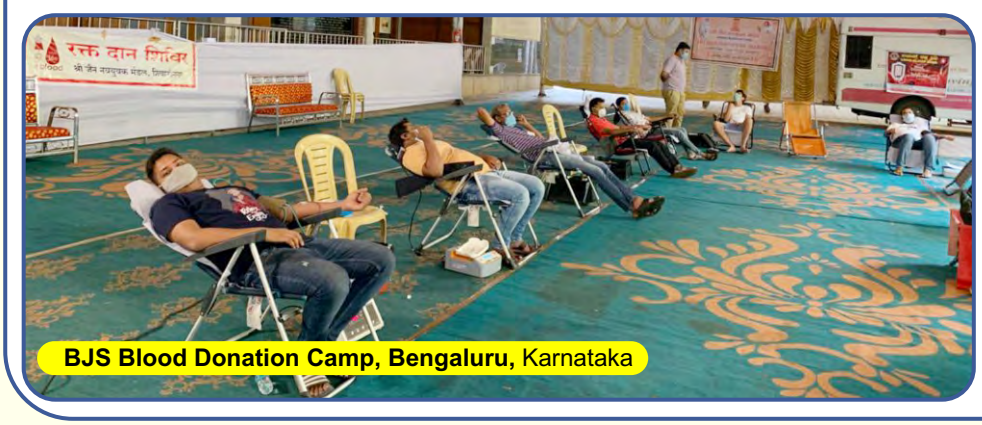

BJS Blood Donation Camp, Bengaluru, Karnataka